होता है। 40 प्रतिशत चयन प्रक्रिया से दूर रहते हैं। परन्तु जीतकर आया उम्मीदवार 20-25 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व तो करता ही है। समाज ने चयन किया है। समूह उसे बहुमत से बनाता है। विभिन्न व्यवस्थाओं के संदर्भ में जब राजधर्म की बात करते हैं तो अपने देश में प्राचीन काल से कहा गया कि राजा व्यक्ति है - समूह का नेतृत्व करता है या तानाशाह हो या एक धर्म पर आधारित हो, सभी संदर्भो में राज्य धर्म की परिभाषा एक है। प्रजापालन उसका कर्त्तव्य है, जनसामान्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करना उसका काम है। देश का आर्थिक तंत्र कैसे चलेगा, उसे स्थापित करके आर्थिक नियोजन करना उसका दायित्व है। न्यायोचित राज्य बनाना, काल सुसंगत व्यवस्थाएं खड़ी करनी हैं। देश की सीमाएं सुरक्षित करनी हैं। देश के शत्रु कौन हैं, और हितैषी कौन, यह समझना है। जनसामान्य सुरक्षित अनुभव करे, यह व्यवस्था करनी है। यही राजा का धर्म है।

धर्म आधारित राज्य की कल्पना में साम्प्रदायिक राज्य नहीं है। जिन्होंने सम्प्रदाय और धर्म को एक करके देखा, उन्होंने ही धर्म राज्य को साम्प्रदायिक राज्य की परिभाषा दी। बापू (महात्मा गांधी) ने जब रामराज्य की कल्पना की थी, उसका अर्थ यह नहीं था कि कोई सांप्रदायिक कर्मकांड करना है या किसी संप्रदाय पर आधारित शासन व्यवस्था का निर्माण करना है। बिना भेदभाव के, न्यायसंगत राज्य की स्थापना करना और विश्व मंच पर राष्ट्र का गौरव स्थापित करना, यह धर्म राज्य है। उस राज्य की सीमा में रहने वाली सारी जनता उस राज्य से जुड़ाव महसूस करे, वह धर्म राज्य है।

दुर्भाग्य से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक कल्याणकारी राज्य की कल्पना चली - लालकिले से पंडित नेहरू ने एलान किया कि अब देश स्वतंत्र हो गया है, अब आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं, सब काम सरकार करेगी। क्या गलत दिशा दे दी! हमारी मानसिकता बनी - सब सरकार करेगी, मुझे देश और समाज के लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं। सभी विषयों के लिए जनसामान्य सरकार पर निर्भर हो गया। सत्ताधीश, अनियंत्रित सत्ता का केन्द्र बन गए। इसलिए सत्ता हथियाने का षडयंत्र चलता है। इसीलिए प्रधानमंत्री बनना है। होना यह चाहिए था कि मुझे धर्म राज्य की स्थापना